भागलपुर जिले में आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी आधार पर प्रवासन का प्रतिरूपः एक भौगोलिक विश्लेषण

आयुष भारती

शोध छात्र, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)

सारांश

प्रवासन भारत में एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय एवं सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया के रूप में उभर कर सामने आया है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ क्षेत्रीय असमानता, सीमित रोजगार अवसर और असंतुलित विकास विद्यमान हैं। प्रस्तुत अध्ययन बिहार के भागलपुर जिले में आयु–समूह, लिंग एवं शैक्षिक स्तर के आधार पर प्रवासन के प्रतिरूपों का विश्लेषण भारत की जनगणना 2011 के प्रवासन आँकड़ों के आधार पर करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि प्रवासन विभिन्न सामाजिक–जनसांख्यिकीय समूहों में किस प्रकार भिन्न होता है तथा इसका ग्रामीण–शहरी गतिशीलता पर क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है तथा वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। आयु–आधारित विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन अत्यधिक कार्यशील आयु वर्ग (15–44 वर्ष) तक केंद्रित है, जो रोजगार एवं आजीविका से प्रेरित प्रवासन की प्रधानता को दर्शाता है। लिंग–आधारित विश्लेषण यह संकेत देता है कि कुल प्रवासियों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों की तुलना में थोड़ी अधिक है, विशेषकर ग्रामीण–शहरी एवं ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन धाराओं में, जो विवाह एवं पारिवारिक पुनर्वास की भूमिका को रेखांकित करता है। वहीं, शैक्षिक स्तर के अनुसार प्रवासन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त प्रवासियों में प्रवासन अधिक शहरी, चयनात्मक एवं अवसर–उन्मुख होता जाता है, जबकि निम्न शैक्षिक स्तर वाले प्रवासी प्रायः अल्प दूरी एवं ग्रामीण प्रवासन से जुड़े रहते हैं। काई–स्क्वायर परीक्षण के परिणाम यह प्रमाणित करते हैं कि आयु, लिंग एवं शिक्षा का प्रवासन से सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध है। समग्र रूप से अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन एक संरचनात्मक एवं चयनात्मक प्रक्रिया है, जिसे आयु–लिंग–शिक्षा–संवेदी नीतियों, संतुलित ग्रामीण–शहरी विकास तथा कौशल–आधारित रोजगार सृजन के माध्यम से विकासोन्मुख बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्दः प्रवासन, आयु संरचना, लिंग, शिक्षा, ग्रामीण–शहरी प्रवासन, भागलपुर जिला, जनगणना 2011।

प्रस्तावना

प्रवासन जनसंख्या गतिशीलता की एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक एवं भौगोलिक प्रक्रिया है, जो किसी भी क्षेत्र की जनसांख्यिकीय संरचना, श्रम–बाजार, तथा ग्रामीण–शहरी संबंधों को गहराई से प्रभावित करती है। सामान्यतः प्रवासन को रोजगार की खोज, आय में वृद्धि, शिक्षा, विवाह तथा जीवन–स्तर में सुधार जैसे कारकों से जोड़ा जाता है। विकासशील देशों, विशेषकर भारत में, ग्रामीण–शहरी प्रवासन क्षेत्रीय असमानताओं और अवसरों के असमान वितरण का प्रत्यक्ष परिणाम है (Kundu, 2009; Skeldon, 2012)।

भारत की जनगणना 2011 के अनुसार देश की शहरी जनसंख्या 31.2 प्रतिशत तक पहुँच चुकी है, जबकि कुल प्रवासियों की संख्या लगभग 45.6 करोड़ दर्ज की गई। इनमें कार्यशील आयु वर्ग (15–59 वर्ष), विशेषकर 20–39 वर्ष के लोग, प्रवासन में सर्वाधिक सक्रिय पाए गए (Census of India, 2011)। यह प्रवृत्ति स्पष्ट करती है कि प्रवासन केवल जनसंख्या का स्थानांतरण नहीं, बल्कि आर्थिक पुनर्संरचना और श्रम गतिशीलता से जुड़ी एक व्यापक प्रक्रिया है।

बिहार जैसे कृषि–प्रधान एवं अपेक्षाकृत पिछड़े राज्य में प्रवासन की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। जनगणना 2011 के अनुसार बिहार की लगभग 88.7 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जबकि रोजगार और सेवा सुविधाओं का संकेंद्रण सीमित शहरी केंद्रों में पाया जाता है। परिणामस्वरूप, राज्य में ग्रामीण–शहरी तथा अंतर्राज्यीय प्रवासन की प्रवृत्ति अत्यंत प्रबल है (Government of Bihar, 2014)। भागलपुर जिला, जो एक ओर गंगा के मैदानी क्षेत्र में स्थित एक कृषि–प्रधान जिला है और दूसरी ओर एक ऐतिहासिक एवं उभरता हुआ शहरी केंद्र, प्रवासन अध्ययन के लिए एक प्रतिनिधि क्षेत्र प्रस्तुत करता है।

जनगणना 2011 के आँकड़ों के आधार पर भागलपुर जिले में प्रवासन का प्रतिरूप आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी संरचना के अनुसार स्पष्ट रूप से भिन्न दिखाई देता है। विश्लेषण से पता चलता है कि प्रवासन मुख्यतः आर्थिक कारकों, जनसांख्यिकीय परिवर्तन तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न आयु वर्गों में अलग–अलग प्रवासन प्रवृत्तियाँ उभर कर सामने आती हैं।

आयु–समूह के संदर्भ में 15–29 वर्ष के युवाओं की भागीदारी प्रवासन में सर्वाधिक पाई जाती है। यह वर्ग मुख्यतः रोजगार, शिक्षा एवं कौशल–आधारित अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों की ओर प्रवास करता है। 30–44 वर्ष के मध्यम आयु वर्ग में भी प्रवासन की तीव्रता अपेक्षाकृत अधिक देखी जाती है, जिसका प्रमुख कारण बेहतर आजीविका, पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन तथा आय–सुरक्षा से जुड़ी आवश्यकताएँ हैं। इसके विपरीत, 65 वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध वर्ग में प्रवासन की प्रवृत्ति काफी कम पाई जाती है, क्योंकि यह वर्ग पारिवारिक संबंधों, सामाजिक नेटवर्क तथा स्थानिक स्थायित्व से अधिक जुड़ा रहता है (Census of India, 2011)।

ग्रामीण–शहरी प्रवासन के संदर्भ में भागलपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी भागलपुर की ओर प्रवासन सबसे प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में उभरता है। यह प्रवाह बेहतर रोजगार, व्यापारिक अवसरों, शिक्षा एवं बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता से प्रेरित है (Kumar et al., 2022; Nupur – Youkta, 2020)। इसके साथ ही, शहरी–शहरी प्रवासन में भी वृद्धि देखी जा रही है, जो यह संकेत देता है कि शहरी क्षेत्र अब केवल ग्रामीण प्रवासियों के ही नहीं, बल्कि अन्य शहरी क्षेत्रों से आने वाले प्रवासियों के लिए भी आकर्षण केंद्र बनते जा रहे हैं (Ansary, 2018)।

हालाँकि, भागलपुर जिले में प्रवासन का स्वरूप केवल ग्रामीण–शहरी तक सीमित नहीं है। आँकड़े यह भी दर्शाते हैं कि ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन की प्रवृत्ति उल्लेखनीय है, जो स्थानीय आर्थिक परिस्थितियों, कृषि–आधारित आजीविका, तथा सामाजिक–पारिवारिक नेटवर्क की भूमिका को रेखांकित करती है (Kumar et al.,2022)। यह तथ्य प्रवासन की जटिलता और बहुआयामी प्रकृति को स्पष्ट करता है।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन भागलपुर जिले में आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी आधार पर प्रवासन के प्रतिरूपों का भौगोलिक विश्लेषण करता है। अध्ययन के निष्कर्ष न केवल जनसंख्या संरचना में हो रहे परिवर्तनों को समझने में सहायक होंगे, बल्कि क्षेत्रीय विकास, शहरी नियोजन एवं प्रवासन–संवेदी नीतियों के निर्माण के लिए भी एक ठोस आधार प्रदान करेंगे।

साहित्य समीक्षा

प्रवासन पर किए गए प्रारंभिक सैद्धांतिक अध्ययनों ने इसे मुख्यतः आर्थिक अवसरों, आयु संरचना तथा स्थानिक असमानताओं से जोड़कर देखा है। Ravenstein (1885) के "Laws of Migration" में यह स्पष्ट किया गया कि युवा आयु वर्ग प्रवासन में अधिक सक्रिय होता है तथा अल्प दूरी का प्रवासन अधिक सामान्य है। आगे चलकर Lee (1966) के Push–Pull मॉडल ने प्रवासन को स्रोत एवं गंतव्य क्षेत्रों की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से जोड़ते हुए रोजगार, आय और जीवन–स्तर को निर्णायक कारक माना।

भारतीय संदर्भ में आंतरिक प्रवासन पर व्यापक विश्लेषण Chandrasekhar और Sharma (2015) द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिन्होंने यह दर्शाया कि भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच दो–तरफा आवागमन (two–way commuting) में वृद्धि हो रही है। उनके अध्ययन में यह भी पाया गया कि अल्पकालिक प्रवासन और लौटकर आने वाले प्रवासियों (return migration) की संख्या में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है, जिससे प्रवासन का स्वरूप पहले की तुलना में अधिक गतिशील और अस्थायी होता जा रहा है।

ग्रामीण–शहरी प्रवासन के प्रतिरूपों पर Rajan Kumar, Singh, Tripathi और Mishra (2022) का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जनगणना आधारित इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि भारत में आंतरिक प्रवासन तथा ग्रामीण–शहरी प्रवासन प्रवाह निरंतर बढ़ रहा है और इसमें महिला प्रवासियों की गतिशीलता पुरुषों की तुलना में अधिक पाई गई है। यह निष्कर्ष प्रवासन के लैंगिक आयाम को रेखांकित करता है, जो पारंपरिक "पुरुष–प्रधान प्रवासन" की धारणा को चुनौती देता है।

राज्य–स्तरीय विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए Ansary (2018) ने 2011 की जनगणना के आधार पर भारत में प्रवासन प्रवाहों के उभरते प्रतिरूपों का मानचित्रण किया। उनके अध्ययन के अनुसार, 2011 में भारत की लगभग 37.5 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी रूप में स्थानिक गतिशीलता का अनुभव कर चुकी थी, जो 2001 की तुलना में अधिक है। यह निष्कर्ष भारत में बढ़ती आंतरिक गतिशीलता और शहरीकरण की तीव्रता को स्पष्ट करता है।

हालिया अध्ययनों में यह भी संकेत मिलता है कि प्रवासन अब केवल लंबी दूरी तक सीमित नहीं रह गया है। Rahul (2022) ने हरियाणा राज्य के अध्ययन में यह पाया कि 2001 से 2011 के बीच जिले के भीतर होने वाला प्रवासन सबसे अधिक दर्ज किया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रवासन धीरे–धीरे एक अल्प–दूरी (short–distance) परिघटना बनता जा रहा है। यह प्रवृत्ति भागलपुर जैसे जिलों में ग्रामीण–ग्रामीण एवं ग्रामीण–शहरी प्रवासन को समझने में सहायक है।

बिहार और विशेष रूप से भागलपुर जिले के संदर्भ में किए गए सूक्ष्म स्तर के अध्ययन प्रवासन की जटिल प्रकृति को और अधिक स्पष्ट करते हैं। Sarvottam Kumar (2020) के भागलपुर जिले पर केंद्रित अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकांश प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं और आश्चर्यजनक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर प्रवासन भी एक प्रमुख प्रवृत्ति है। यह तथाकथित "paradoxical migration" स्थानीय सामाजिक नेटवर्क, कृषि मौसमीकरण और अस्थायी आजीविका अवसरों की भूमिका को रेखांकित करता है।

इसी क्रम में Migration of Labourers in Bihar: A Geographical Study जैसे अध्ययनों ने यह दर्शाया कि बिहार में श्रमिक प्रवासन के ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक–आर्थिक आयाम गहराई से जुड़े हुए हैं। इन अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकाला गया कि सीमित औद्योगीकरण, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता और रोजगार की कमी बिहार में distress–driven migration को बढ़ावा देती है, तथा ग्रामीण औद्योगीकरण, कौशल विकास और नीति समर्थन को इसके समाधान के रूप में सुझाया गया है।

समग्र रूप से, उपलब्ध साहित्य यह स्पष्ट करता है कि भारत में प्रवासन एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें आयु–समूह, ग्रामीण–शहरी संरचना, लिंग, दूरी तथा स्थानीय सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ निर्णायक भूमिका निभाती हैं। तथापि, भागलपुर जिले जैसे मध्यम आकार के जिलों में आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी आधार पर प्रवासन के प्रतिरूपों का समग्र और एकीकृत भौगोलिक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध–अंतराल को भरने का प्रयास करता है और जनगणना 2011 के आँकड़ों के आधार पर भागलपुर जिले में प्रवासन की स्थानिक–आयुवर्गीय संरचना को स्पष्ट करने का लक्ष्य रखता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- भागलपुर जिले में विभिन्न आयु–समूहों के अनुसार प्रवासन के प्रतिरूपों का विश्लेषण करना।
- ग्रामीण–शहरी एवं शहरी–ग्रामीण प्रवासन प्रवाह की संरचना को स्पष्ट करना।
- कार्यशील आयु वर्ग के प्रवासन और उसके सामाजिक–आर्थिक निहितार्थों का मूल्यांकन करना।

आँकड़ों का स्रोत एवं शोध–पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन भागलपुर जिले में आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी आधार पर प्रवासन के प्रतिरूपों का विश्लेषण करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। यह शोध पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिनका मुख्य स्रोत भारत की जनगणना 2011 है। जनगणना को भारत में जनसंख्या, प्रवासन और सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं से संबंधित सर्वाधिक प्रामाणिक एवं व्यापक आँकड़ा स्रोत माना जाता है, इसलिए इस अध्ययन में उसी का उपयोग किया गया है।

शोध–पद्धति मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति की है। सर्वप्रथम जनगणना से प्राप्त आँकड़ों को आयु–समूह, ग्रामीण–शहरी श्रेणी एवं प्रवासन प्रकार के अनुसार वर्गीकृत किया गया। इसके पश्चात् आँकड़ों का सारणीकरण एवं तुलनात्मक विश्लेषण किया गया, जिससे विभिन्न आयु वर्गों और ग्रामीण–शहरी क्षेत्रों में प्रवासन की तीव्रता एवं प्रवृत्तियों को स्पष्ट किया जा सके। आयु–समूह आधारित विश्लेषण के अंतर्गत प्रवासियों को प्रमुख कार्यशील आयु वर्ग (15–29, 30–44 वर्ष), वृद्ध आयु वर्ग (60 वर्ष से अधिक) तथा आश्रित आयु वर्ग में विभाजित कर उनके प्रवासन प्रतिरूपों का अध्ययन किया गया। ग्रामीण–शहरी विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि भागलपुर जिले में प्रवासन मुख्यतः किस दिशा में केंद्रित है तथा शहरी भागलपुर किस सीमा तक आकर्षण केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। आँकड़ों के विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण हेतु MS Office जैसे सांख्यिकीय एवं सारणीकरण उपकरणों का उपयोग किया गया। परिणामों को स्पष्ट और प्रभावी बनाने के लिए प्रतिशत, अनुपात तथा आयु–समूह आधारित वितरण का सहारा लिया गया है।

शोध की सीमा

यह अध्ययन केवल जनगणना 2011 के आँकड़ों पर आधारित है, अतः हालिया वर्षों में प्रवासन में आए परिवर्तनों को इसमें प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं किया जा सका है। इसके बावजूद, जनगणना 2011 के विस्तृत और विश्वसनीय आँकड़े भागलपुर जिले में प्रवासन के संरचनात्मक प्रतिरूपों को समझने के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन के लिए भागलपुर जिले (बिहार) का चयन किया गया है, जो प्रवासन के आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी प्रतिरूपों के विश्लेषण हेतु एक उपयुक्त एवं प्रतिनिधि क्षेत्र प्रदान करता है। भागलपुर जिला बिहार राज्य के पूर्वी भाग में गंगा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है और ऐतिहासिक, आर्थिक तथा भौगोलिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। यह जिला लगभग 25°14′ से 25°30′ उत्तरी अक्षांश तथा 86°37′ से 87°30′ पूर्वी देशांतर के बीच विस्तृत है। इसके उत्तर में मधेपुरा, पूर्णिया एवं कटिहार जिला, दक्षिण में बांका जिला, पूर्व में मुंगेर एवं पश्चिम में खगड़िया जिला स्थित है।

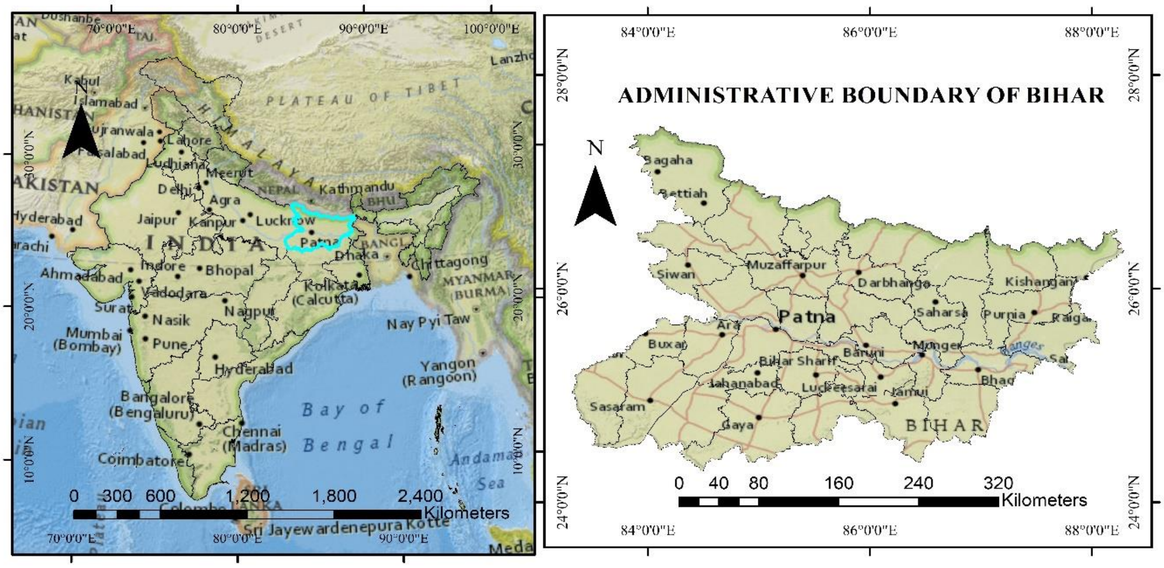

भौगोलिक दृष्टि से भागलपुर जिला मुख्यतः गंगा के जलोढ़ मैदान का भाग है, जहाँ उपजाऊ मिट्टी, समतल भू–आकृति तथा कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पाई जाती है। इसके दक्षिणी भागों में कुछ पठारी एवं वनाच्छादित क्षेत्र भी मिलते हैं, जो आजीविका के अवसरों में क्षेत्रीय विषमता को जन्म देते हैं। यही भौगोलिक विविधता प्रवासन की प्रवृत्तियों को प्रभावित करने वाले एक प्रमुख कारक के रूप में उभरती है।

जनगणना 2011 के अनुसार भागलपुर जिले की कुल जनसंख्या लगभग 30 लाख से अधिक है, जिसमें ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात शहरी जनसंख्या की तुलना में अधिक है। जिले में भागलपुर नगर निगम प्रमुख शहरी केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो शिक्षा, व्यापार, परिवहन, स्वास्थ्य एवं प्रशासनिक गतिविधियों का केंद्र है। इसके अतिरिक्त, कहलगाँव और सुल्तानगंज जैसे नगर क्षेत्र भी स्थानीय स्तर पर शहरी कार्यों का निर्वहन करते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भागलपुर जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, पशुपालन एवं असंगठित क्षेत्र पर आधारित है, जबकि शहरी क्षेत्रों में व्यापार, लघु उद्योग, सेवा क्षेत्र तथा शैक्षणिक गतिविधियाँ प्रमुख हैं। रोजगार के अवसरों का यह असमान स्थानिक वितरण ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी भागलपुर की ओर प्रवासन को प्रोत्साहित करता है। साथ ही, सीमित औद्योगीकरण और कृषि की मौसमी प्रकृति ग्रामीण युवाओं को वैकल्पिक आजीविका की खोज में प्रवासन के लिए प्रेरित करती है।

भागलपुर जिला प्रवासन के अध्ययन की दृष्टि से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ ग्रामीण–शहरी, ग्रामीण–ग्रामीण तथा अंतर्राज्यीय प्रवासन तीनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। जनगणना 2011 के आँकड़े संकेत देते हैं कि जिले में विशेषकर 15–44 वर्ष का कार्यशील आयु वर्ग प्रवासन में सर्वाधिक सक्रिय है, जो सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता को दर्शाता है।

इस प्रकार, भौगोलिक स्थिति, ग्रामीण–शहरी संरचना, कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था तथा उभरते शहरी केंद्रों के कारण भागलपुर जिला आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी आधार पर प्रवासन के भौगोलिक विश्लेषण के लिए एक उपयुक्त अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है।

परिणाम एवं विश्लेषण

- **आयु–समूह के अनुसार प्रवासन का प्रतिरूप**

तालिका 1 : भागलपुर जिले में आयु–समूह के अनुसार प्रवासी जनसंख्या, 2011

आयु–समूह (वर्ष)	प्रवासी जनसंख्या	प्रतिशत (%)
0–14	25	0.3
15–19	157	1.9
20–24	484	5.8
25–29	812	9.7
30–34	1,040	12.4
35–39	1,099	13.1
40–44	933	11.1
45–49	787	9.4
50–54	585	7.0
55–59	455	5.4
60–64	272	3.2
65–69	161	1.9
70–74	115	1.4
75+	55	0.7
आयु न निर्दिष्ट	33	0.4
कुल	**8,373**	**100.0**

स्रोत– भारत की जनगणना 2011, Migration Tables (D–7), भागलपुर जिला

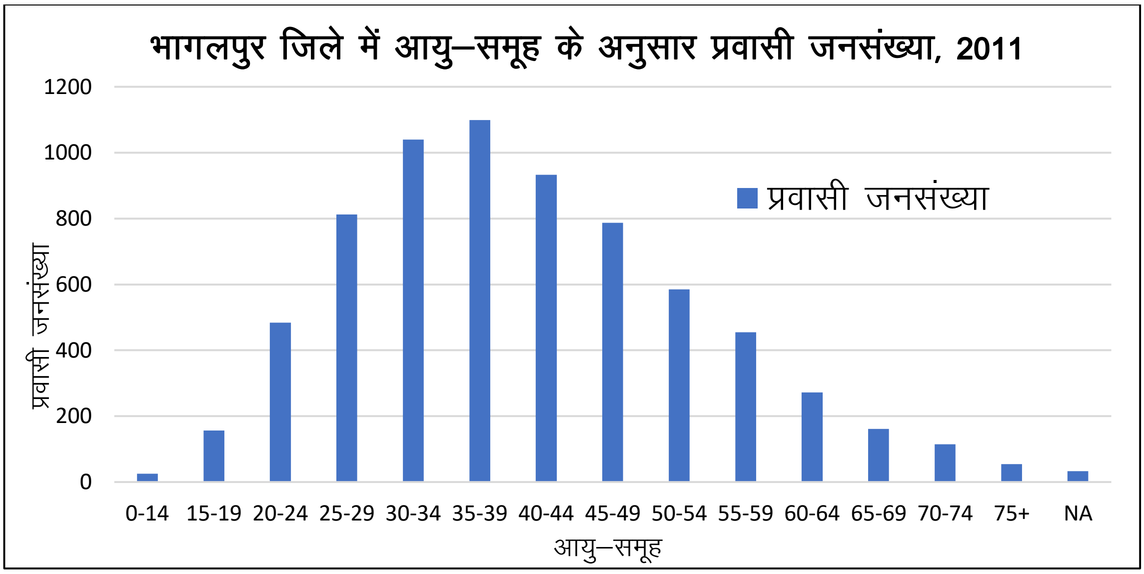

तालिका 1 से स्पष्ट है कि भागलपुर जिले में प्रवासन अत्यधिक आयु–चयनात्मक प्रकृति का है। कुल प्रवासियों में लगभग 46 प्रतिशत जनसंख्या 25–44 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग से संबंधित है। यह वर्ग रोजगार, आय–सुरक्षा एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के कारण सर्वाधिक प्रवास करता है।

15–29 वर्ष का युवा आयु वर्ग शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् आजीविका की तलाश में प्रवासन करता है, जबकि 30–44 वर्ष का वर्ग अपेक्षाकृत अधिक स्थायी एवं परिवार–आधारित प्रवासन से जुड़ा है। इसके विपरीत, 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में प्रवासन न्यूनतम पाया जाता है, जो सामाजिक जड़ों, स्वास्थ्य कारणों एवं स्थानिक स्थायित्व को दर्शाता है। यह प्रतिरूप ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम–क्षरण और शहरी क्षेत्रों पर बढ़ते जनसंख्या दबाव की ओर संकेत करता है।

- **ग्रामीण–शहरी प्रवासन का प्रतिरूप**

तालिका 2 : भागलपुर जिले में ग्रामीण–शहरी प्रवासन प्रवाह, 2011

प्रवासन धारा	प्रवासी जनसंख्या	प्रतिशत (%)
ग्रामीण → शहरी	5,093	60.8
ग्रामीण → ग्रामीण	2,794	33.4
शहरी → शहरी	739	8.8
शहरी → ग्रामीण	547	6.5
कुल	**8,373**	**100.0**

स्रोत– भारत की जनगणना 2011, Migration Tables (D–7), भागलपुर जिला

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में ग्रामीण–शहरी प्रवासन (60.8%) सर्वाधिक प्रभावी प्रवृत्ति है। यह प्रवाह शहरी भागलपुर को एक प्रमुख आकर्षण केंद्र के रूप में स्थापित करता है, जहाँ रोजगार, शिक्षा, व्यापार एवं सेवा क्षेत्र के अवसर अपेक्षाकृत अधिक हैं। ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन का उच्च अनुपात (33.4%) यह दर्शाता है कि प्रवासन केवल शहरीकरण से संबंधित नहीं है, बल्कि स्थानीय आर्थिक परिस्थितियाँ, कृषि मौसमीकरण एवं सामाजिक नेटवर्क भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शहरी–शहरी प्रवासन का उभरता स्वरूप यह संकेत देता है कि भागलपुर जैसे मध्यम आकार के शहर अब अन्य शहरी क्षेत्रों से भी प्रवासियों को आकर्षित कर रहे हैं। शहरी–ग्रामीण प्रवासन अपेक्षाकृत कम है, जो यह दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्र अब सीमित संख्या में ही शहरी प्रवासियों को आकर्षित कर पा रहे हैं।

आयु–समूह एवं ग्रामीण–शहरी दोनों प्रतिरूपों को संयुक्त रूप से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन मुख्यतः कार्यशील आयु वर्ग का ग्रामीण–शहरी स्थानांतरण है। यह प्रवृत्ति एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम संसाधन के क्षरण को जन्म देती है, वहीं दूसरी ओर शहरी भागलपुर पर आवास, रोजगार एवं बुनियादी सुविधाओं का दबाव बढ़ाती है। यह विश्लेषण संकेत देता है कि प्रवासन–संवेदी क्षेत्रीय नियोजन एवं ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ीकरण की तत्काल आवश्यकता है।

- **लिंग–आधारित प्रवासन प्रतिरूप**

जनगणना 2011 के प्रवासन आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि भागलपुर जिले में प्रवासन केवल पुरुष–प्रधान प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसमें महिलाओं की भागीदारी भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आयु, वैवाहिक स्थिति, ग्रामीण–शहरी संरचना तथा सामाजिक–सांस्कृतिक कारण महिलाओं के प्रवासन को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं।

तालिका 3 : भागलपुर जिले में लिंग के अनुसार प्रवासी जनसंख्या का वितरण, 2011

प्रवासन धारा	पुरुष (%)	महिला (%)
ग्रामीण → शहरी	44.6	55.4
ग्रामीण → ग्रामीण	47.8	52.2
शहरी → शहरी	56.1	43.9
शहरी → ग्रामीण	49.3	50.7
कुल प्रवासी	**48.9**	**51.1**

स्रोत– भारत की जनगणना 2011, Migration Tables (D–7), भागलपुर जिला

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में कुल प्रवासियों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से थोड़ी अधिक है। विशेष रूप से ग्रामीण–शहरी तथा ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन धाराओं में महिला प्रवासियों का प्रभुत्व दिखाई देता है। यह प्रतिरूप भारत में प्रचलित विवाह–आधारित प्रवासन की सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा को दर्शाता है, जहाँ विवाह के पश्चात् महिलाएँ अपने मूल निवास स्थान से गंतव्य क्षेत्र की ओर स्थानांतरित होती हैं।

ग्रामीण–शहरी प्रवासन में महिलाओं की अधिक भागीदारी यह संकेत देती है कि शहरी भागलपुर केवल रोजगार के लिए पुरुषों को ही नहीं, बल्कि पारिवारिक पुनर्वास के माध्यम से महिलाओं को भी आकर्षित कर रहा है। यह प्रवृत्ति शहरीकरण के सामाजिक आयाम को उजागर करती है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और पारिवारिक सुरक्षा जैसे कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके विपरीत, शहरी–शहरी प्रवासन में पुरुषों की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। यह प्रवृत्ति मुख्यतः रोजगार परिवर्तन, सेवा क्षेत्र की गतिशीलता तथा पेशेवर अवसरों से जुड़ी हुई है, जो पुरुष–प्रधान आर्थिक प्रवासन को दर्शाती है।

महिला प्रवासन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अधिकांश महिला प्रवासन आश्रित या पारिवारिक प्रकृति का होता है, जबकि पुरुष प्रवासन अपेक्षाकृत अधिक आर्थिक एवं स्वतंत्र निर्णय–आधारित होता है। फिर भी, हालिया प्रवृत्तियों में यह देखा गया है कि शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, घरेलू कार्य, असंगठित सेवा क्षेत्र एवं लघु व्यापार से जुड़ी गतिविधियों के कारण महिलाओं की आर्थिक भागीदारी भी धीरे–धीरे बढ़ रही है।

लिंग–आधारित विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन का स्वरूप केवल आर्थिक नहीं, बल्कि गहराई से सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना से जुड़ा हुआ है। महिलाओं की अधिक गतिशीलता ग्रामीण सामाजिक ढाँचे, विवाह व्यवस्था और पारिवारिक संरचना को प्रतिबिंबित करती है, जबकि पुरुष प्रवासन श्रम बाजार और रोजगार अवसरों से अधिक संबंधित है। इस प्रकार, महिला प्रवासन को केवल आश्रित प्रवासन के रूप में देखना अपर्याप्त होगा; यह शहरीकरण, सामाजिक परिवर्तन और परिवार संरचना में हो रहे व्यापक बदलावों का भी संकेतक है।

- **शैक्षिक स्तर के अनुसार प्रवासन का प्रतिरूप**

शिक्षा प्रवासन को प्रभावित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक कारक है। जनगणना 2011 के आँकड़े यह संकेत देते हैं कि भागलपुर जिले में प्रवासन की तीव्रता और दिशा शैक्षिक स्तर के अनुसार स्पष्ट रूप से भिन्न है। उच्च शैक्षिक स्तर के साथ प्रवासन की प्रवृत्ति अधिक सशक्त और शहरी–उन्मुख होती जाती है।

तालिका 4 : भागलपुर जिले में शैक्षिक स्तर के अनुसार प्रवासी जनसंख्या का वितरण (2011)

शैक्षिक स्तर	प्रवासियों का अनुपात (%)	प्रमुख प्रवासन प्रवृत्ति
अशिक्षित	28.6	ग्रामीण → ग्रामीण
प्राथमिक (कक्षा 1–5)	22.4	ग्रामीण → ग्रामीण / ग्रामीण → शहरी
माध्यमिक (कक्षा 6–10)	26.8	ग्रामीण → शहरी
उच्च माध्यमिक (कक्षा 11–12)	12.1	ग्रामीण → शहरी / शहरी → शहरी
स्नातक एवं उससे ऊपर	10.1	शहरी → शहरी
कुल	**100.0**	–

स्रोत– भारत की जनगणना 2011, Migration Tables (D–7), भागलपुर जिला

तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन और शिक्षा के बीच एक सकारात्मक एवं संरचनात्मक संबंध विद्यमान है। अशिक्षित तथा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त प्रवासियों की बड़ी संख्या मुख्यतः ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन से जुड़ी हुई है। यह प्रवृत्ति कृषि मौसमीकरण, स्थानीय श्रम की मांग, पारंपरिक पेशों तथा सामाजिक नेटवर्क आधारित स्थानांतरण को दर्शाती है।

माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 6–10) प्राप्त प्रवासियों में ग्रामीण–शहरी प्रवासन सर्वाधिक प्रभावी पाया जाता है। यह वर्ग अर्ध–कुशल श्रम, निर्माण कार्य, लघु उद्योग एवं असंगठित सेवा क्षेत्र से जुड़कर शहरी भागलपुर की ओर प्रवास करता है। यह प्रतिरूप यह संकेत देता है कि माध्यमिक शिक्षा प्रवासन को शहरी अवसरों से जोड़ने वाला एक संक्रमण बिंदु है।

उच्च माध्यमिक एवं स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त प्रवासियों में प्रवासन का स्वरूप अधिक शहरी–केन्द्रित और चयनात्मक हो जाता है। इस वर्ग में शहरी–शहरी प्रवासन की प्रवृत्ति प्रमुख है, जो शिक्षा, प्रशासनिक सेवाओं, व्यापार, बैंकिंग, स्वास्थ्य एवं अन्य सेवा क्षेत्रों से जुड़ी हुई है। यह प्रतिरूप भागलपुर जैसे मध्यम आकार के शहर की भूमिका को एक क्षेत्रीय शैक्षिक एवं सेवा केंद्र के रूप में स्थापित करता है।

शैक्षिक स्तर बढ़ने के साथ महिला प्रवासियों की भागीदारी में भी गुणात्मक परिवर्तन देखा जाता है। जहाँ अशिक्षित और प्राथमिक शिक्षित महिलाओं का प्रवासन मुख्यतः विवाह एवं पारिवारिक कारणों से जुड़ा होता है, वहीं माध्यमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में प्रवासन धीरे–धीरे शिक्षा, रोजगार और आत्मनिर्भरता से जुड़ने लगता है। यह प्रवृत्ति भागलपुर जिले में सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण के उभरते संकेतों को दर्शाती है।

शिक्षा–आधारित प्रवासन विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि निम्न शैक्षिक स्तर प्रवासन को स्थानीय एवं ग्रामीण दायरे में सीमित रखता है, जबकि उच्च शिक्षा प्रवासन को शहरी, दीर्घकालिक और अवसर–आधारित बनाती है। इस प्रकार, शिक्षा न केवल प्रवासन की दिशा निर्धारित करती है, बल्कि उसकी प्रकृति और स्थायित्व को भी प्रभावित करती है।

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि भागलपुर जिले में प्रवासन एक एकल–कारक आधारित प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह आयु संरचना, लिंग भूमिकाओं और शैक्षिक स्तर के परस्पर प्रभाव से संचालित एक बहुआयामी परिघटना है। आयु–समूह आधारित विश्लेषण से यह प्रमाणित होता है कि प्रवासन मुख्यतः कार्यशील आयु वर्ग (15–44 वर्ष) तक केंद्रित है, जो त्ंअमदेजमपद के प्रवासन नियमों तथा ज्वकंतव मॉडल के "आर्थिक अपेक्षा" सिद्धांत से मेल खाता है। युवा एवं मध्यम आयु वर्ग का प्रभुत्व यह दर्शाता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन आजीविका रणनीति के रूप में अपनाया जा रहा है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार अवसरों की पृष्ठभूमि में।

लिंग–आधारित विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि भागलपुर जिले में महिलाओं की प्रवासन गतिशीलता पुरुषों की तुलना में थोड़ी अधिक है, विशेषकर ग्रामीण–शहरी और ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन धाराओं में। यह निष्कर्ष Rajan Kumar et al. (2022) द्वारा प्रस्तुत उस निष्कर्ष की पुष्टि करता है, जिसमें महिलाओं को भारत में अधिक गतिशील बताया गया है। तथापि, भागलपुर के संदर्भ में महिला प्रवासन का स्वरूप मुख्यतः विवाह एवं पारिवारिक पुनर्वास से जुड़ा हुआ है, जो इसे आर्थिक प्रवासन से आंशिक रूप से भिन्न बनाता है। इसके विपरीत, पुरुष प्रवासन अपेक्षाकृत अधिक रोजगार–उन्मुख और स्वतंत्र निर्णय आधारित पाया गया, विशेषकर शहरी–शहरी प्रवासन में।

शैक्षिक स्तर और प्रवासन के संबंध पर चर्चा करते हुए यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा प्रवासन की दिशा और प्रकृति दोनों को प्रभावित करती है। निम्न शैक्षिक स्तर (अशिक्षित एवं प्राथमिक शिक्षित) वाले प्रवासी मुख्यतः ग्रामीण–ग्रामीण या अल्प दूरी प्रवासन से जुड़े हुए हैं, जो Rahul (2022) द्वारा हरियाणा के संदर्भ में प्रस्तुत "short-distance migration" की अवधारणा से साम्य रखता है। इसके विपरीत, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त प्रवासियों में ग्रामीण–शहरी तथा शहरी–शहरी प्रवासन की प्रवृत्ति अधिक पाई गई, जो Ansary (2018) और Chandrasekhar एवं Sharma (2015) के निष्कर्षों से मेल खाती है।

आयु, लिंग एवं शिक्षा को संयुक्त रूप से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि युवा, शिक्षित पुरुष प्रायः आर्थिक अवसरों की तलाश में शहरी–शहरी या अंतर–क्षेत्रीय प्रवासन करते हैं, जबकि युवा एवं मध्यम आयु वर्ग की महिलाएँ मुख्यतः पारिवारिक एवं सामाजिक कारणों से ग्रामीण–शहरी प्रवासन में संलग्न होती हैं। हालाँकि, उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में धीरे–धीरे आर्थिक एवं आत्मनिर्भर प्रवासन के संकेत भी उभर रहे हैं, जो भागलपुर जैसे मध्यम आकार के शहरों में सामाजिक परिवर्तन का द्योतक है।

समग्र रूप से, यह अध्ययन Skeldon (2012) के उस दृष्टिकोण की पुष्टि करता है, जिसमें प्रवासन को विकास और असमानताओं से जुड़ी एक गतिशील प्रक्रिया माना गया है। भागलपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्रों से कार्यशील और शिक्षित जनसंख्या का निरंतर बहिर्गमन एक ओर ग्रामीण अर्थव्यवस्था में श्रम–क्षरण उत्पन्न करता है, वहीं दूसरी ओर शहरी भागलपुर पर आवास, रोजगार और बुनियादी सेवाओं का दबाव बढ़ाता है। इस प्रकार, प्रवासन न केवल जनसंख्या संरचना को प्रभावित करता है, बल्कि क्षेत्रीय विकास की असमानताओं को भी और अधिक गहरा करता है।

अतः भागलपुर जिले में प्रवासन को केवल एक जनसांख्यिकीय प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि आर्थिक अवसरों, सामाजिक संरचना और शैक्षिक विषमता से जुड़ी एक समग्र विकासात्मक चुनौती के रूप में समझना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण आगे चलकर प्रवासन–संवेदी नियोजन एवं नीति–निर्माण के लिए एक ठोस वैचारिक आधार प्रदान करता है।

नीति–निहितार्थ एवं सुझाव

भागलपुर जिले में प्रवासन के आयु–समूह, लिंग तथा शैक्षिक प्रतिरूपों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि प्रवासन केवल जनसंख्या स्थानांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि क्षेत्रीय विकास में निहित संरचनात्मक असमानताओं का प्रतिफल है। अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि 15–44 वर्ष का कार्यशील आयु वर्ग प्रवासन में सर्वाधिक सक्रिय है, अतः ग्रामीण क्षेत्रों में इस वर्ग को लक्षित करते हुए स्थानीय रोजगार सृजन, कौशल–आधारित प्रशिक्षण तथा गैर–कृषि आजीविका के अवसरों का विस्तार किया जाना आवश्यक है। यदि ग्रामीण युवाओं को स्थानीय स्तर पर स्थायी रोजगार उपलब्ध कराए जाएँ, तो विवशताजन्य प्रवासन की तीव्रता को कम किया जा सकता है।

लिंग–आधारित विश्लेषण यह दर्शाता है कि भागलपुर जिले में महिला प्रवासन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसे नीतिगत दृष्टि से लंबे समय तक उपेक्षित किया गया है। महिला प्रवासियों के लिए शहरी क्षेत्रों में सुरक्षित आवास, स्वास्थ्य सेवाएँ, बाल–देखभाल सुविधाएँ तथा कार्यस्थल सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है, ताकि प्रवासन उनके लिए सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बन सके। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में महिला–केन्द्रित स्व–सहायता समूहों, घरेलू उद्योगों एवं सूक्ष्म–वित्तीय सहायता को बढ़ावा देकर महिलाओं के लिए स्थानीय आजीविका विकल्प सृजित किए जा सकते हैं, जिससे विवाह–आधारित या आश्रित प्रवासन पर निर्भरता कम हो।

शैक्षिक स्तर के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा प्रवासन की दिशा और प्रकृति को निर्णायक रूप से प्रभावित करती है। माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं के लिए कौशल–विकास कार्यक्रमों को स्थानीय रोजगार से जोड़ना आवश्यक है, जबकि उच्च शिक्षा प्राप्त जनसंख्या के लिए भागलपुर को एक क्षेत्रीय शैक्षिक एवं सेवा केंद्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। विशेष रूप से शिक्षित महिला प्रवासियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में रोजगार से जोड़ने से न केवल प्रवासन का आर्थिक स्वरूप सुदृढ़ होगा, बल्कि लैंगिक समानता को भी बढ़ावा मिलेगा।

समग्र रूप से, अध्ययन यह सुझाव देता है कि प्रवासन को रोकने के बजाय उसे प्रवासन–संवेदी एवं समावेशी नियोजन के माध्यम से प्रबंधित किया जाना चाहिए। ग्रामीण–शहरी संतुलित विकास, जिला–स्तरीय प्रवासन प्रोफाइल का निर्माण तथा आयु–लिंग–शिक्षा आधारित नीति हस्तक्षेप भागलपुर जिले में प्रवासन को एक नकारात्मक बाध्यता के बजाय क्षेत्रीय विकास के सकारात्मक साधन में परिवर्तित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो आयु संरचना, लिंग भूमिका और शैक्षिक स्तर के परस्पर प्रभाव से संचालित होती है। जनगणना 2011 के आँकड़ों के आधार पर यह स्थापित होता है कि प्रवासन मुख्यतः 15–44 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग तक केंद्रित है, जो ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम–क्षरण और शहरी क्षेत्रों पर बढ़ते जनसंख्या दबाव को दर्शाता है। लिंग–आधारित विश्लेषण यह संकेत देता है कि महिला प्रवासन भागलपुर जिले में एक महत्वपूर्ण, किंतु सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से संरचित परिघटना है, जो मुख्यतः विवाह और पारिवारिक पुनर्वास से जुड़ी हुई है। वहीं, शिक्षा–आधारित विश्लेषण यह दर्शाता है कि जैसे–जैसे शैक्षिक स्तर बढ़ता है, प्रवासन अधिक शहरी, चयनात्मक और अवसर–उन्मुख होता जाता है।

समग्र रूप से, अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भागलपुर जिले में प्रवासन को केवल एक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि क्षेत्रीय असमानताओं, सामाजिक परिवर्तन और विकासात्मक अवसरों के संकेतक के रूप में समझना आवश्यक है। यदि आयु, लिंग और शिक्षा–संवेदी नीतियों के माध्यम से प्रवासन को समुचित रूप से प्रबंधित किया जाए, तो यह न केवल व्यक्तिगत आजीविका सुधार का माध्यम बन सकता है, बल्कि संतुलित और समावेशी क्षेत्रीय विकास की दिशा में भी एक सशक्त उपकरण सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ

1. Ansary, R. (2018). Emerging Patterns of migration streams in India: A State Level Analysis of 2011 Census. *Migration Letters*, *15*(3), 347–360. https://doi.org/10.33182/ML.V15I3.357
2. Chandrasekhar, S., & Sharma, A. (2015). *Urbanization and Spatial Patterns of Internal Migration in India*. *3*(2), 63–89. https://doi.org/10.1007/S40980-015-0006-0
3. Census of India. (2011). *Migration tables (D-series), Census of India 2011*. New Delhi: Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
4. Deshingkar, P., & Akter, S. (2009). Migration and human development in India. *Human Development Research Paper*, United Nations Development Programme.
5. Government of Bihar. (2014). *Economic survey of Bihar*. Patna: Finance Department, Government of Bihar.
6. Kundu, A. (2009). Urbanisation and migration: An analysis of trend, pattern and policies in Asia. *Human Development Research Paper*, UNDP.
7. Kumar, R., Singh, A. K., Tripathi, V. K., & Mishra, G. (2022). Trend and Pattern of Rural-Urban Migration in India. *International Journal of Current Microbiology and Applied Sciences*, *11*(6), 344–352. https://doi.org/10.20546/ijcmas.2022.1106.038

8. Kumar, S. (2020). *A Geographical Analysis of Rural Male Out-Migration: A Case Study of Bhagalpur District* (pp. 331–355). Springer, Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-15-1668-9_14
9. Lee, E. S. (1966). A theory of migration. *Demography*, 3(1), 47–57. https://doi.org/10.2307/2060063
10. *Migration of Labourers in Bihar: A Geographical Study*. (2023). https://doi.org/10.55041/ijsrem26824
11. Nupur, S., & Youkta, K. (2020). *Pattern and characteristics of migration from bihar: evidence from census data*. 1–7. https://doi.org/10.36713/EPRA5425
12. Rahul. (2022). Changing patterns of migration in haryana. *International Journal of Research - Granthaalayah*, *10*(9), 143–152. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v10.i9.2022.4796
13. Ravenstein, E. G. (1885). The laws of migration. *Journal of the Statistical Society of London*, 48(2), 167–235.
14. Skeldon, R. (2012). Migration and development: A global perspective. *International Migration*, 50(3), 1–14.
15. Todaro, M. P. (1976). *Internal migration in developing countries*. Geneva: International Labour Office.